हरिद्रा
(सांस्कृतिक शोध का अन्तर्राष्ट्रीय उपक्रम)
ISSN : 2582-9092

मन्थनम् में नारी विमर्श

डॉ॰ सारिका वार्ष्णेय

सारांश –

मन्थनम्1 नामक इस कृति में परमानन्द शास्त्री ने स्त्री विमर्श की दृष्टि से महाकवि कालिदासकृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक की उस घटना को अपने काव्य का विषय बनाया है जो शकुन्तला के जन्म परिचय की मात्र जानकारी देती है। शकुन्तला मेनका अप्सरा एवं ऋषि विश्वामित्र की औरस पुत्री है। किन्तु यहाँ कवि ने उस अनछुए विशय पर मन्थन किया है कि देवराज इन्द्र के द्वारा स्वर्ग की अप्सरा मेनका को ऋषि विश्वामित्र की तपस्या को भंग करने के उद्देश्य से पृथ्वी पर भेजा गया। विवश होकर मेनका ने वैसा ही किया, ऋषि संग से एक पुत्री को उत्पन्न किया किन्तु विवशता के कारण उस पुत्री का त्याग करना पड़ा। आद्योपरान्त उस नियोग प्रक्रिया में मेनका के मन की प्रतिक्रिया एवं गान्धर्व विवाह के उपरान्त परित्यक्ता शकुन्तला की मनोस्थिति को डॉ॰ परमानन्द शास्त्री ने काव्य का रूप प्रदान किया, जिसमें नारी मनोविज्ञान, नारी के आत्म संघर्ष, उसकी परवशता और उसकी वेदना की अनुभूति को प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द – ऋषि, शोडश संस्कार, इन्द्रलोक, तपस्या, मालती नदी, आश्रम, गान्धर्व विवाह, सुमेरु पर्वत।

शोध –उद्देश्य– प्रस्तुत शोध–पत्र के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

- नारी का सदैव सम्मान करना।
- नारी को भोग विलास की वस्तु न समझकर उसके वास्तविक अस्तित्व को स्वीकार करना।
- नारी सुरक्षा की संपूर्ण व्यवस्था करना।
- नारी को संपूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान करना।
- नारी को बलपूर्वक किसी भी कार्य के लिए विवश न करना।
- नारी को सुदृढ़ बनाने के लिए सदैव प्रयासरत रहना।

शोध पद्धति – प्रस्तुत शोध–पत्र में सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तावना – "मन्थनम्" परमानन्द शास्त्री द्वारा रचित खण्डकाव्य है। आधुनिक संस्कृत–साहित्य के पुरोधा डॉ॰ परमानन्द शास्त्री (1926–2007) अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में भूतपूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष2 रहे, जिन्होंने संस्कृत–साहित्य की विभिन्न विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई। उनकी मौलिक रचनाएँ इसप्रकार हैं– गन्धदूतम्, जनविजयम्, परिदेवनम्, वानरसन्देशः, चीरहरणम्, भारतशतकम्, विप्रश्निका, कौन्तेयम्, संतोशकल्पतरुः, परमानन्दसूक्तिशतकम्, स्वरभारती,

ISSN : 2582-9092

आनन्दगीतिका, सरसैयदअहमदख़ाँचरितम्, अन्योक्तितूणीरम्, मन्थनम्, आनन्दग़ालिबीयम्, अपराजिता, मत्स्यगंधा, सौवर्णीवाचालता, संस्कृत गलज्जलिकाकादम्बिनी, मन्दिरप्रदीपः, शकुन्तला, सौरभसन्देशः, ब्रजभारती ।3

विश्लेशण – परमानन्द शास्त्री ने काव्य सागर के मन्थन से नवनीत रस निकालने की अपनी निपुणता दिखाई है। एक अनुभूति प्रवण कवि के रूप में आत्म मन्थन की क्षमता भी प्रकट की है। यह खण्डकाव्य स्त्री विमर्श का उत्तम उदाहरण है जहाँ स्त्री उस कार्य को करने के लिए विवश है, जिसमें उसकी इच्छा ही नहीं है। तिरस्कार, अवहेलना एवं परित्याग स्त्री से उसका आत्मविश्वास छीनकर उसे ग्लानि से भर देते हैं। स्त्री अपना आत्म–सम्मान खो कर सदैव पुरुष पर आश्रित हो जाती है।

मन्थनम् काव्य पाँच चक्रों में विभक्त है तथा इसमें 303 श्लोक हैं। काव्य के पाँच चक्रों में से प्रथम चक्र मेनका एवं द्वितीय चक्र मेनका एवं शकुन्तला दोनों से सम्बन्धित है। अन्य तीन चक्रों में शकुन्तला का वर्णन प्राप्त होता है। इस काव्य में मुख्य नारी पात्र शकुन्तला को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में चित्रित किया गया है। शास्त्री जी के अनुसार नारी कोमलता, लज्जाशीलता, विश्वसनीयता इत्यादि गुणों से युक्त होती है। वह त्याग की मूर्ति है फिर भी सदियों से उसका शोषण होता चला आ रहा है। नारी को सदैव भोग विलास का साधन समझा गया। इस समाज में नारी को सदैव तिरस्कृत ही किया गया है। कभी उसकी सराहना की जाती है तो कभी उसे दबा दिया जाता है। कभी उसे देवी का स्थान दे दिया जाता है जिसके बिना शोडश संस्कार नहीं हो सकते, तो कभी उसपर हो रहे अत्याचारों को अनदेखा कर दिया जाता है। सदियों से चली आ रही इन अनीतिपूर्ण व्यवस्थाओं का परिणाम नारियों को ही भुगतना पड़ता है जिसका ज्वलन्त उदाहरण स्वर्ग की अप्सरा मेनका है। मेनका को देवता इन्द्र ने ऋशि विश्वामित्र को अपने वश में करके उनकी तपस्या को भंग करने का आदेश दिया। स्पश्ट है कि मेनका उनके आदेश को मना नहीं कर सकी। फलस्वरूप चिन्ता, हर्ष, औत्सुक्य, प्रणय इत्यादि मनोभावों से युक्त होकर ऋषि के समक्ष जा पहुँची और नाना प्रकार की श्रृंगारिक चेश्टाएँ करके उन्हें मोहित करने का प्रयास किया। इस कार्य में वह तो सफल न हो सकी अपितु स्वयं ही उनकी ओर आकर्षित हो गई। उसका कथन है कि–

श्मश्रूविरूपाननलम्बकूर्चे तपोधने स्निह्यति किं मनो मे।
सत्यं मनो दुश्करमेव रोद्धुम् उच्छृङ्खलं नो क्व कदा गतं स्यात्।। 4

निरन्तर प्रयास करने के बाद भी असफलता मिलने पर मेनका उनके गात्र का स्पर्ष कर उनके अङ्क में बैठ गई। इसप्रकार ऋषि विश्वामित्र की तपस्या भंग करने में वह अन्ततः सफल हो गई। ऊपर चढ़ने के लिए सैकड़ों प्रयास करने पड़ते हैं परन्तु नीचे गिरने के लिए एक गलती ही बहुत है–

अध्यात्मलोकादिहलोकमाप्तः, समाधिभंगात् पतितस्तपस्वी।
यत्नैः भातैः संभवमूर्ध्वयानम् अधः प्रयातुं त्रुटिरेकिकाऽलम्।।5

ISSN : 2582-9092

अपनी त्रुटि का अनुभव होते ही ऋशि शीघ्रता से तपस्या हेतु अन्यत्र चले गए किन्तु मेनका इन्द्रलोक नहीं जा सकी। वह पृथ्वी पर रहकर ही गर्भावस्था के निर्धारित काल के पूरा होने की प्रतीक्षा करने लगी। पुत्री के जन्म लेते ही उसे इन्द्र की ओर से स्वर्ग पहुँचने का आदेश प्राप्त हुआ। वह अपनी पुत्री को इन्द्रलोक नहीं लेकर जाना चाहती थी। इसी विषय में सोचकर वह चिन्तित थी। वह मालिनी नदी के किनारे अपनी पुत्री को छोड़कर स्वयं अदृश्य हो जाती है। महर्शि कण्व के द्वारा उस कन्या का नाम शकुन्तला रखे जाने व लालन पालन हेतु तपोवन में ले जाए जाने पर मेनका अत्यन्त प्रसन्न हो जाती है–

निगूहितात्मा च विलोकयन्ती मनस्यपारां मुदमाप माता।
श्रमार्जितं कश्चिदिवात्मवित्तं निक्षिप्य रक्ष्यं भृचिसाधुहस्ते।। 6

शकुन्तला आश्रम में तापस कन्याओं के साथ खेलती हुई गौतमी की देख–रेख में यौवनावस्था को प्राप्त हुई। इसी बीच शकुन्तला और दुश्यन्त को एक दूसरे से प्रेम हो जाता है और दोनों गान्धर्व विवाह कर लेते हैं। विवाहोपरान्त दुश्यन्त उसे शीघ्र ही राजमहल बुलाने का कहकर चला जाता है। अधिक समय हो जाने पर वह कण्व ऋषि द्वारा पतिगृह भेजी गई। गर्भवती शकुन्तला का दुष्यन्त द्वारा निशेध कर दिया जाता है। विवशता एवं अपमान से घिरी हुई शकुन्तला को देखकर मेनका कहती है–

प्रवञ्चिता त्यक्तनिपीडिता वा यदापि कन्या भवशुरालये स्यात्।
सा रक्षणीया खलु साधिकारम् आचार आद्यः पितृगेहिनां सः।।7

पुरुष और नारी समाज–निर्माण में दोनों की बराबर की भूमिका होती है। दोनों साथ मिलकर गृहस्थ जीवन को सुखी बनाते हैं। पुरुष के बिना नारी नहीं और नारी के बिना पुरुष नहीं, इसी एकत्वभाव को पति–पत्नी अपने भीतर समावेशित करते हैं। फिर भी सामाजिक मानसिकता के संकीर्ण होने के कारण पत्नी का परित्याग कर देते हैं। समाज में व्याप्त इन कुरीतियों पर विचार मंथन करती हुई मेनका कहती है कि कहीं यह मेरे द्वारा किए गए अपराध का ही परिणाम तो नहीं है।8 वह कहती है कि दो लोगों के मिलन पर उनमें से जो निर्बल होता है उसी की उग्रहानि होती है–

द्वयोर्मिथः संगमनावघट्टे, यो निर्बलः सोऽस्तु हि सावधानः।
किंचित् क्वचिद् दुर्घटते कदाचित्, तस्यैव संभाव्यत उग्रहानिः।।9

शास्त्री जी कहते हैं कि नारी त्याग, क्षमाशीलता इत्यादि अपने प्राकृतिक स्वभाव के कारण अपने साथ हो रहे अत्याचारों के विरुद्ध लड़ नहीं पाती है। वह सहनशीलता की देवी अपना सब कुछ त्याग कर भार्या मात्र बन जाती है। दुश्यन्त के द्वारा छोड़े जाने पर शकुन्तला अत्यन्त दुखी होती है। वह इस घटना को चाहकर भी नहीं भूल पाती। वह लज्जाशीला शकुन्तला दुष्यन्त के बारे में विचार करती है–

कामी नृपो मामुपभुज्य मुग्धां कौमारहर्ता ह्यभवन्न भर्ता।
विभिन्नरागेन्द्रधनुःक्षणाभाः कामार्तपुंसां प्रणया भवन्ति।।10

ISSN : 2582-9092

वह स्त्री जीवन पर कटाक्ष करती है कि नारी की स्थिति कुएँ के जल के समान होती है जो नर की पिपासा को बारम्बार शान्त करता है।11

पितृसत्तात्मक इस समाज में पुरुष प्रवंचन, बलात्कार, अपहरण, दासता, अपमान इत्यादि सभी प्रकार से स्त्री पर अपनी प्रभुता स्थापित करना चाहता है। वह बर्बरता के साथ उसका भोग करके उसकी हत्या तक कर देता है। सुर–असुर, देवता, राक्षस, ऋषि, मनुष्य सभी का यही हाल है। युगों–युगों से चलती आ रही इन विकराल समस्याओं का कहीं कोई अन्त दिखाई नहीं देता है।

शकुन्तला पुरुष जाति के कामभाव को अमर बताती है। उसका कथन है कि काम से सन्तप्त होकर ही सुन्द उपसुन्द भाई होकर भी नश्ट हो गए।12 अपने पुत्र के यौवन को प्राप्त करने के बाद भी राजा ययाति की कामवासना शान्त नहीं हुई।13

सदियों से यह रीति चली आ रही है कि स्त्री पराया धन होती है। उसे एक न एक दिन पति के घर जाना ही होता है। इसी कारण लोग उसे बोझ समझकर शीघ्र अपने सर से उतार फेंकते हैं। पिता अपनी अर्जित सम्पत्ति की भाँति किसी के साथ भी अपनी पुत्री का विवाह कर देता है। पुत्री को अपनी इच्छा व्यक्त करने का अधिकार नहीं दिया जाता है। शास्त्री जी ऐसे लोगों पर तीक्ष्ण कटाक्ष करते हैं–

निजार्जिता सम्पदितीव जाता यस्मै हि कस्मै जनको ददाति।
पत्युर्गृहे धेनुरिवास्तु बद्धा उलूखले वा गजदन्तके वा।।14

सामाजिक रीति रिवाजों के बारे में सोचते हुए शकुन्तला अपने चंचल मन को भी डाँटती है कि रे हृदय तुम मर्यादा द्वारा नहीं रोके गए, लज्जा द्वारा भी तुम बलपूर्वक नहीं रोके गए। धैर्य भी तुम्हें न रोक सका। तुमने अपने मन की बात पूर्ण कैसे कर ली।15

नारी एक माँ के रूप में महान होती है। वह स्वयं कष्ट झेलकर अपनी संतान को सभी प्रकार के दुखों से दूर रखती है। उसकी सन्तान ही उसके लिए सब कुछ होती है, जिसे आँख भरकर देख मात्र लेने से उसमें नई स्फूर्ति आ जाती है। इसीप्रकार चक्रवर्ती लक्षणों से युक्त अपने पुत्र को देखकर शकुन्तला भी अपने दुखों को भूल गई। अपनी गोद में पुत्र को लिए हुए सुमेरु पर्वत को भी तृण के समान मानती है। इसका अत्यन्त रमणीय वर्णन यहाँ देखने को मिलता है–

अङके तनूजं दधती सुमेरौ तृणाय साऽमन्यत हेमहारान्।
तथाविधश्चेत् तनुजः स्थितोऽङ्के इच्छेन्न माता भातहीरहारान्।।16

पुत्र रत्न की प्राप्ति होने पर शकुन्तला स्वयं को पूर्ण समझती है। वह कहती है कि–

अद्यास्मि जाया जननी यतोस्मि पूर्णास्मि नारी जनजन्मदात्री।
पुनश्च भार्यात्वमथास्तु नो वा पदं ततोऽप्युच्चतरं गतास्मि।।17

ISSN : 2582-9092

कुछ बड़े होने पर उसका पुत्र अपनी माता से उसके पिता के बारे में पूछता है। उस समय दुष्यन्त का परिचय देते हुए वह अत्यन्त दुखी हो जाती है परन्तु पुत्र की तोतली वाणी सुनकर वह शीघ्र ही प्रसन्न भी हो जाती है। वह दुष्यन्त को याद करती हुई कहती है कि अब मैं और अधिक ताप सहने में समर्थ नहीं हूँ। तुम्हारा पुत्र कितना महान है। ऐसे महान पुत्र को अब आकर खुद ही सम्भालो।18

काव्य के अन्त में राजा दुष्यन्त को स्मरण होता है कि उसने अपनी पत्नी को किसप्रकार अपमानित कर उसे अस्वीकार कर दिया था। भाग्यवश युद्ध से लौटते समय मारीचि आश्रम में शकुन्तला और उसके पुत्र भरत को देखकर दुष्यन्त अत्यन्त प्रसन्नचित्त हो जाता है–

भाकुन्तलां सा भरतं नृपं च, भानैः क्रमात्स्पश्टदृशा ददर्श।
हर्शाश्रुधारार्द्र–कपोल–पाली, पपौ दृशोत्सस्थसुतं कृतार्था।।19

निष्कर्श– एक नारी ही पुरुष को जन्म देती है और दुख की बात तो यह है कि उसे सबसे अधिक भय भी पुरुष से ही है। उसे समाज की संकीर्ण मानसिकता ने अबला स्वरूप प्रदान किया है। पिता, पति, भाई, बेटा इन सभी समाज के ठेकेदारों ने नारी से उसकी स्वतन्त्रता को छीन लिया है। उसका अपना कोई अस्तित्व ही नहीं रहा है। कामवश न जाने कितने पुरुशों ने स्त्रियों को यातनाएँ पहुँचाई हैं इसकी कोई गणना ही नहीं है। शास्त्री जी के अनुसार 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः'20 पुरुषों का यह वैधानिक कथन सर्वथा दम्भ ही सिद्ध हुआ है। स्त्री एक माता, पत्नी, पुत्री, बहन के रूप में सदैव पुरुषों के साथ खड़ी रही है। वह सदैव अपनी योग्यता के बल पर पुरुशों से आगे निकलती जा रही है, परन्तु पुरुष प्रधान समाज को यह स्वीकार्य नहीं है।

प्रस्तुत शोधपत्र के द्वारा स्त्री की वास्तविक विचारधारा को प्रकाश में लाने का प्रयास किया गया है। उद्भट विचारों की प्रस्तुति ही सामाजिक परिवर्तन का वह सशक्त माध्यम है जिससे क्रान्ति सम्भव है। अपने अधिकारों के प्रति सचेष्ट नारी स्वयं की गरिमामयी स्थिति को प्राप्त कर समाज में उच्च अधिकारों को प्राप्त करे– शास्त्री जी के विचारों को सार्थक रूप प्रदान करना ही इस शोधपत्र का ध्येय है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1. **मन्थनम्** – परमानन्द शास्त्री, प्रथम संस्करणम् 2001 खीश्टाब्दे
2. **परमानन्दभाास्त्रिरचनावलिः** – डॉ॰ सत्यप्रकाश शर्मा एवं प्रो॰ परमेश्वरनारायण शास्त्री, राश्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्, नवदेहली, 2016, पृ0 12
3. **वही** – पृ0 12–14
4. **मन्थनम्, परमानन्दभाास्त्रिरचनावलिः** – डॉ॰ सत्यप्रकाश शर्मा एवं प्रो॰ परमेश्वरनारायण शास्त्री, राश्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्, नवदेहली, 2016, पृ0 371, 1/33

ISSN : 2582-9092

5. वही– पृ0 374, 1/53
6. वही– पृ0 377, 2/11
7. वही– पृ0 380, 2/31
8. वही– पृ0 382, 2/43
9. वही– पृ0 382, 2/45
10. वही– पृ0 384, 3/6
11. वही– पृ0 385, 3/8
12. वही– पृ0 385, 3/12
13. वही– पृ0 386, 3/14
14. वही– पृ0 386, 3/20
15. वही– पृ0 391, 3/55
16. वही– पृ0 395, 4/11
17. वही– पृ0 395, 4/13
18. **आगच्छ रे निर्दय! एहि! एहि, सोढुं समर्थास्म्यधिकं न तापम्।**
जातस्तनूजोऽद्य कियान् महाँस्ते, सम्भालयैनं स्वकरेण एत्य।।, वही– पृ0 400, 4/45
19. वही – पृ0 412, 5/70
20. **मनुस्मृतिः** – कुल्लूकभट्ट, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2014, पृ0 215 3/56

एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
वीमेंस कॉलेज
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय
अलीगढ़ (उ॰प्र॰)